STD VIII Sanskrit

PAGE :
DATE : / /

वन्दना

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम।
भद्रं पश्येमाक्षभिः।
शं नः चतस्रः दिशः भवन्तु।
आतङ्क हीनं जगदस्तु सर्वम्।

अर्थ - हम कानों से अच्छी बातें सुनें, आँखों से अच्छा देखें, चारों दिशाएँ हमारे लिए कल्याणप्रद हों। सारा संसार आतंक रहित हो।

पाठ - 1 सुगमम् संस्कृतम्

हिन्दी अनुवाद -

प्रीति - अरे सुनीता, क्यों उदास हो?
सुनीता - क्या करती हूँ। संस्कृत परीक्षा में मेरे अंक बहुत अच्छे नहीं हैं।
प्रीति - दुःखी मत हो। परिश्रम और समय से सब पूरा होता है।
सुनीता - सखी, तुम्हें सच बोलती हूँ - मुझे तो संस्कृत अच्छा नहीं लगता है। क्या यह कठिन भाषा तुम्हें अच्छा लगता है?
प्रीति - सुनीता, वास्तव में संस्कृत सरल तो नहीं कठिन है।
सुनीता - वह कैसे?
प्रीति - अभ्यास से ही निपुणता होती है। इसलिए शुरू में जो कठिन प्रतीत होता है समय से वह सरल होता है।
सुनीता - लेकिन धातुरूप, शब्दरूप यह सब कैसे कंठस्थ होंगे।
प्रीति - सुनीता, शब्द रूप और धातु रूप का प्रयोग ठीक समझना चाहिए। क्या तुम घर जाकर पाठ का वाचन नियम से करती हो।

Scanned by CamScanner

PAGE :
DATE : / /

सुनीता - कैसे करती हूँ ? अध्यापिका जो कक्षा में पढ़ाती है मैं वहीं नहीं समझती हूँ ।

प्रीति - चिन्ता मत करो । सावधानीपूर्वक सुनने से और बार-बार पढ़ने से सब समझ जाओगी ।

सुनीता - तुम कुछ सच बोलती हो । कक्षा में मन लगाकर और पाठ का दुहराव करके मुझे भाषा का प्रयोग जानना चाहिए ।

प्रीति - चिन्ता मत करो । मैं भी तुम्हारी सहायता करूँगी ।

सुनीता - इस तरह मेरे भी संस्कृत परीक्षा में अच्छे अंक होंगे ।

प्रीति - यह कैसे । सखी, जानती हो यह जो संस्कृत एक भाषा है । सुनने से, बोलने से, पढ़ने से और लिखने से शुद्ध होता है ।

सुनीता - इस समय जानती हो - संस्कृत कैसे पढ़ना चाहिए । आज से ही कक्षा में सावधान से रहूँगी ।

Scanned by CamScanner